

मिथ्यात्व को नशाया, निज तत्त्व को प्रकाशा ।  
 आपा-पराया-भासा, हो भानु के समानी ॥१॥  
 षट् द्रव्य को बताया, स्याद्वाद को जताया ।  
 भवफन्द से छुड़ाया, सच्चि जिनेन्द्र वाणी ॥२॥  
 रिपु चार मेरे मग में, जंजीर डाले पग में ।  
 ठाड़े हैं मोक्ष-मग में, तकरार मोसों ठानी ॥३॥  
 दे ज्ञान मुझको माता, इस जग से तोड़ूँ नाता ।  
 होवे 'सुदर्शन' साता, नहीं जग में तेरी सानी ॥४॥

(८)

नित पीज्यो धी धारी, जिनवाणी सुधा-सम जानिके।टेक॥  
 वीर मुखारविंदतैं प्रकटी, जन्म-जरा भयटारी ।  
 गौतमादि गुरु-उर घट व्यापी, परम सुरुचि करतारी ॥१॥  
 सलिल समान कलिल मल गंजन, बुधमन रंजन हारी ।  
 भंजन विभ्रम धूलि प्रभंजन, मिथ्या जलद निवारी ॥२॥  
 कल्याणक तरु उपवन धरिनी, तरनी भवजल तारी ।  
 बंधविदारन पैनी छैनी, मुक्ति-नसैनी सारी ॥३॥  
 स्व-परस्वरूप प्रकाशन को यह, भानुकला अविकारी ।  
 मुनिमन कुमुदिनि-मोदन शशिभा, शमसुख सुमन सुवारी ॥४॥  
 जाके सेवत बेवत निजपद, नसत अविद्या सारी ।  
 तीन लोकपति पूजत जाको, जान त्रिजग-हितकारी ॥५॥  
 कोटि जीभ सों महिमा जाकी, कहि न सके पविधारी<sup>१</sup> ।  
 'दौल' अल्पमति केम कहै यह, अधम-उधारन हारी ॥६॥

(९)

साँची तो गंगा यह वीतरागवाणी ।  
 अविच्छिन्न धारा निजधर्म की कहानी ॥टेक॥

१. इन्द्र